शिक्षण प्रतिमान :- [Teaching Models]

शिक्षण-सिद्धान्तों के प्रतिपादन का प्रयास किया जा रहा है उसके लिए परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया है। इन परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु प्रयोग किये जा रहे हैं। जिस परिकल्पना की भी पुष्टि शिक्षण से की जाती है, उसे 'शिक्षण प्रतिमान' की संज्ञा दी गई है। परिकल्पना में शिक्षण के लक्ष्य को महत्व दिया जाता है, इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु शिक्षण के जिस स्वरूप की संरचना की जाती है उसे शिक्षण प्रतिमान कहते हैं। यदि उस प्रतिमान के लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है तब वही प्रतिमान, शिक्षण सिद्धांत कहलायेगा। उदाहरण के लिए बी० एफ० स्किनर ने सक्रिय अनुबन्ध अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। स्किनर ने व्यवहार परिवर्तन के लिए अपने अधिगम-सिद्धान्त पर आधारित शिक्षण-प्रतिमान का प्रतिपादन किया, जिसे शृंखला अभिक्रमित अधिगम कहते हैं, जिस पर विभिन्न विषयों में तथा विभिन्न कक्षाओं में इसका प्रयोग किया जा रहा है। प्रयोग से यह पुष्टि हो जाती है, इससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जाता है, तब सक्रिय अनुबन्ध शिक्षण सिद्धान्त का प्रतिपादन हो जायेगा।

शिक्षण आव्यूह का प्रमुख कार्य शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करना है, जिससे शिक्षक छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाने में समर्थ होते हैं। इस प्रकार शिक्षण आव्यूह एक 'शिक्षण प्रतिमान' अथवा शिक्षण प्रारूप प्रदान करता है, जिसके आधार पर शिक्षक पाठ्यक्रम की क्रियाओं को सम्पादित करता है।

सिद्धान्तों का प्रतिपादन, पूर्व सिद्धान्तों के आधार पर किया जाता है। शिक्षण और अधिगम का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जहां शिक्षण होता है, वहां अधिगम होना आवश्यक है। परन्तु सीखने के लिए शिक्षण आवश्यक नहीं है। बिना शिक्षण के भी अधिगम होता है। क्रानबेक का कथन है कि शिक्षण सिद्धान्त का प्रतिपादन अधिगम सिद्धान्तों की सहायता से किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण सिद्धान्तों का आधार अधिगम के सिद्धांत माने जाते हैं। गेने का भी विचार है कि अधिगम के प्रकार शिक्षण के लिए मूल आधार हैं।

SUN 05

अनुदेशन प्रारूप परिकल्पनात्मक तथ्यों को सहज रूप में परीक्षण के लिए स्वीकार करता है।

अनुदेशन प्रारूप के प्रकार :— अनुदेशन प्रारूप को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है—

1. **प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप [Training Psychology Design]**
मनोविज्ञान प्रारूप कार्य विश्लेषण तथा उसके सम्बन्धित तत्वों पर बल देता है। प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप शैक्षिक तकनीकों के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसकी खोज सैनिकों की अनुक्रियाओं के परिणाम स्वरूप हुई थी। इस प्रारूप में विश्लेषण विधि की अध्ययता ली जाती है, जिसमें प्रशिक्षण अंगो का विकास किया जाता है। प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप उद्देश्यों तथा कार्यों पर बल देता है।

2. **सम्प्रेषण नियंत्रण प्रारूप [Cybernetic Design]**
सम्प्रेषण नियंत्रण शब्द अंग्रेजी के साइबरनेटिक से लिया गया है। साइबरनेटिक्स ग्रीक भाषा के Kybernets [काइबरनेट्स] से निकला है जिसका अर्थ पायलट या प्रशासक है। काइबरनेट्स से अभिप्राय शासन करने से है अतः यह कहा जा सकता है कि सम्प्रेषण नियन्त्रण प्रशासन करने की एक व्यवस्था अथवा प्रारूप है। यह प्रारूप दो तंत्रों के व्यवहार को नियंत्रित कर उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने का कार्य करता है।

3. **प्रणाली उपागम [System Approach]:** प्रणाली उपागम का जन्म द्वितीय विश्व युद्ध के समय हुआ। यह उपागम उस समय से लेकर आज तक सरकार, सेना तथा व्यापार के क्षेत्र से सम्बन्धित प्रबंधकीय निर्णयों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इसका अभिप्राय एक निश्चित क्रमबद्ध व्यवस्था से है जिसमें संगठन के प्रत्येक भाग का सम्बन्ध संगठन के दूसरे भाग से स्पष्ट होना चाहिए।